Theory of Inflation

पूर्ति की क्षमता की तुलना में मांग अतिरेक के कारण कीमतों में वृद्धि को मुद्रा स्फीति कहा जाता है। वैसे मुद्रा स्फीति से तात्पर्य सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि से है। लेकिन मुद्रा स्फीति वह स्थिति है जिसमें वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमत बहुत तेजी से बढ़ती है जबकि वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन उस गति से नहीं बढ़ता। इसतरह वस्तु की मांग एवं पूर्ति में असंतुलन के कारण कीमत तेजी से बढ़ने लगती है।

classical economists से ~~मुद्रास्फीति~~ लेकर Modern economists ने मुद्रास्फीति की व्याख्या अलग अलग ढंग से की है। मुद्रास्फीति के संदर्भ में सर्वप्रथम classical economists ने विचार प्रस्तुत किया। उनके अनुसार "मुद्रा की मात्रा और कीमत में सीधा और आनुपातिक संबंध होता है। जब मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है तो स्फीति का जन्म होता है।

मुद्रास्फीति दर को नया मुद्रा सृजन दर प्रभावित करता है। $\frac{\Delta M}{M}$ के द्वारा ΔP प्रभावित होगी। अगर $\frac{\Delta M}{M} = 3\%$ per year, तब मूल्य वृद्धि $\Delta P = 3\%$ per year. classical economists के मुद्रास्फीति संबंधित व्याख्या को रेखाचित्र से प्रदर्शित किया जा सकता है —

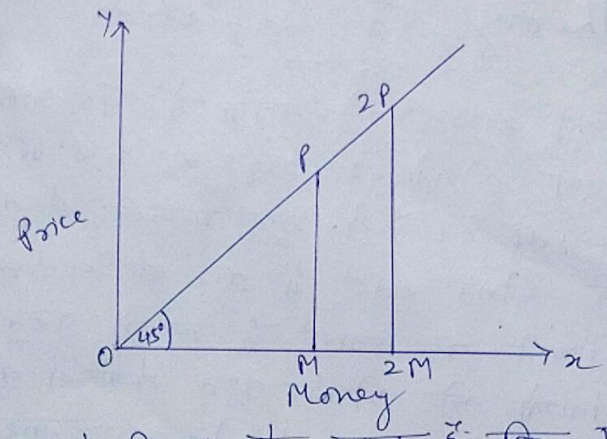

उपर के चित्र से स्पष्ट है कि मुद्रास्फीति या मुल्य वृद्धि का कारण मुद्रा की मात्रा में वृद्धि है।

Wicksell ने classical अर्थशास्त्रियों की मुद्रा स्फीति सिद्धान्त की कड़ी आलोचना किया क्योंकि यह सिद्धान्त यह नहीं बतलाता है कि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि से कैसे मुल्य में वृद्धि होती है।

मुद्रास्फीति को वस्तु की मांग तथा पुर्ति या वस्तु का उत्पादन लागत प्रभावित करता है। इस सम्बन्ध में भिन्न अर्थशास्त्रीयों के भिन्न-भिन्न विचार है। इसलिए मुद्रास्फीति सिद्धान्त को दो भागों में बाँटा जाता है—

1. Demand Pull Inflation
2. Cost Push Inflation

1. Demand Pull Inflation

Demand Pull inflation उस मुल्य वृद्धि को कहते है जब वस्तु की लागत एंव पुर्ति रेखा स्थिर रहती है, किन्तु वस्तु की मांग बढ़ जाती है।

Garner Ackley के अनुसार "Demand pull inflation occures only when supply of commodity fixed, demand is rising continiously and consequently Price is also rising continiously."

निम्न रेखाचित्र की सहायता से Demand pull inflation को स्पष्ट किया जा सकता है —

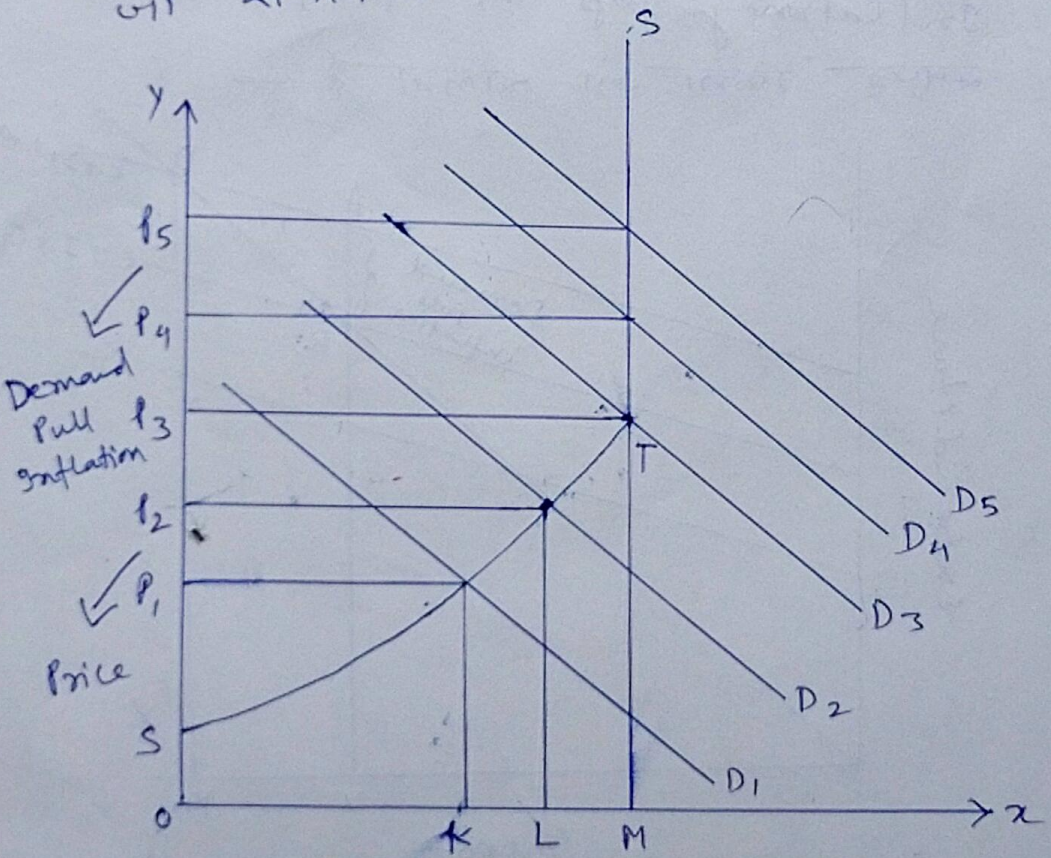

Demand and Supply

उपरोक्त चित्र में जब मांग D_3 से बढ़ती है तो पूर्ति OM स्थिर रहती है फलस्वरूप मूल्य बढ़कर P_4 तथा P_5 हो जाती है। इस मूल्य वृद्धि को Demand pull inflation कहते हैं।

इसप्रकार के मुल्यवृद्धि की कोई सीमा नही है।

Keynes Demand Inflation

Keynes ने मुद्रास्फीति का विश्लेषण Inflationary gap के रूप में किया है। Inflationary gap की स्थिति में पुर्ण रोजगार के स्तर से अधिक कुल व्यय होता है तो इसके फलस्वरूप तेजी से मुल्य वृद्धि होती है। Inflationary gap को निम्न चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है —

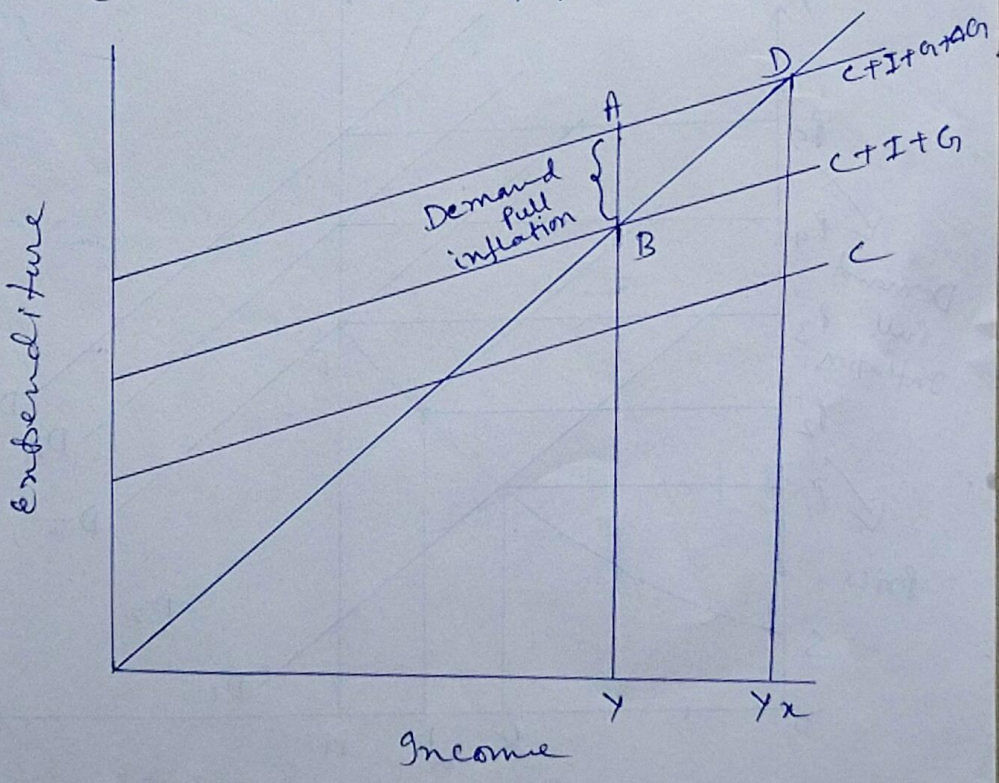

उपर के चित्र से स्पष्ट है कि C+I+G कुल व्यय के स्तर पर पुर्ण रोजगार की प्राप्ती हो जाती है तथा Real income स्थिर हो जायेगा। अगर अब AG के बराबर